## महाराणा प्रताप का जीवनक्रम

- जन्म - ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया, वि. स. 1597 तदनुसार, 9 मई 1540 ई., कुम्भलगढ़
- उदयपुर स्थापना - वैशाख शुक्ल तृतीया, वि. स. 1610, तदनुसार, 15 अप्रेल 1553 ई.
- वागड़ प्रदेश की विजय - 1554 ई.
- छप्पनिया राठौड़ों पर विजय -1555 ई.
- विवाह - सन 1557 ई. में बिजौलिया के मामरख पंवार की पुत्री अजब दे के साथ
- अमर सिंह का जन्म - चैत्र शुक्ला सप्तमी, वि. स. 1613 ( 16 मार्च, 1559 ई. ) चित्तौड़गढ़
- मालवा के सुलतान बाज बहादुर को आश्रय - 1562 ई.
- गौड़वाड़ प्रदेश पर विजय - 1563-64 ई.
- चित्तौड़ पर मुगल आक्रमण तथा तीसरा जौहर और साका - 1567-1568 ई.
- महाराणा उदय सिंह का निधन - 29 फरवरी 1572 ई. ( गोगुन्दा )
- महाराणा प्रताप का राजतिलक - 29 फरवरी 1572 ई. ( गोगुन्दा में महादेव की बावड़ी )
- महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक - मार्च 1572 ई. ( कुम्भलगढ़ )
- मालवा में मुगलों के मन्दसौर थाने पर महाराणा का आक्रमण और विजय- 1572 ई.
- मुगल दूत जलाल खाँ कोरची का मेवाड़ आगमन- अक्टूबर 1572 ई.
- कुँ. मानसिंह और महाराणा प्रताप की भेंट- जून 1573 ई. ( उदयसागर तालाब )
- राजा भगवन्तदास का मेवाड़ आगमन - सितम्बर 1573 ई.
- राजा टोडरमल और महाराणा की भेंट - अक्टूबर 1573 ई.
- हल्दी घाटी युद्ध - 18 जून 1576 ई.
- महाराणा की गोगुन्दा पर विजय - सितम्बर 1576 ई.
- अकबर का मेवाड़ पर आक्रमण - अक्टूबर 1576 ई.
- आवरगढ़ में अस्थायी राजधानी - 1577 ई.
- शाहबाज खान का प्रथम आक्रमण - 15 अक्टूबर 1577 ई.
- महाराणा द्वारा मोही पर कब्जा - 1577 ई.
- कुम्भलगढ़ का युद्ध - 3 अप्रेल 1578 ई.
- महाराणा द्वारा वागड़ और छप्पन प्रदेश पर विजय - 1578 -79 ई.
- भामाशाह का मालवा से दण्ड वसूलना एवं महाराणा प्रताप को भेंट करना - 1578 ई.
- शाहबाज खान का द्वितीय आक्रमण - दिसम्बर 1578 ई.
- महाराणा द्वारा डूँगरपुर और बाँसवाड़ा पर विजय - 1579 ई.
- शाहबाज खान का तृतीय आक्रमण - नवम्बर 1579 ई.
- अब्दुर्रहीम खानखाना का मेवाड़ पर प्रथम आक्रमण - 1580 ई.
- महाराणा का मालवा पर आक्रमण, मन्दसौर पर विजय - 1580 ई.
- महाराणा की दिवेर विजय - अश्विन शुक्ल दशमी, वि.स.1540 ( 16 सितम्बर 1583 ई. )
- महाराणा द्वारा डूँगरपुर और बाँसवाड़ा पर विजय - 1582-83 ई.
- जगन्नाथ कछवाहा का आक्रमण - दिसम्बर 1584 ई.
- चावण्ड में स्थायी राजधानी की स्थापना - दिसम्बर 1585-जनवरी 1586 ई.
- सम्पूर्ण मेवाड़ में सत्ता पुनर्स्थापित - अक्टूबर 1585 ई.
- महाराणा की जहाजपुर पर विजय - 1588 ई.
- महाराणा का राजनगर पर आक्रमण दलेल खाँ की पराजय - 1591 ई.
- महाराणा प्रताप का देवलोक - माघ शुक्ल एकादशी, वि. स.1653 ( 19 जनवरी 1597 ई. )

*Statue of Pride*

## प्रताप गौरव केन्द्र ''राष्ट्रीय तीर्थ''
## मुख्य आकर्षण

Scan for Location

**प्रताप गौरव केन्द्र ''राष्ट्रीय तीर्थ''**
टाईगर हिल, मनोहरपुरा, बड़गांव के पास, उदयपुर ( राज. )
सम्पर्क सूत्र : 9468545516
info@pratapgauravkendra.org /pgkudaipur /pgkudaipur /pgkudaipur

PRATAP GAURAV KENDRA RASHTRIYA TIRTHA

# प्रताप गौरव केन्द्र ''राष्ट्रीय तीर्थ''

वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की हल्दीघाटी विजय के 450 वर्ष पूर्ण होने पर

# हल्दीघाटी विजय
# सार्द्ध चतु:शती समारोह

मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि

## माननीय श्री मोहनराव भागवत जी

परम पूजनीय सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

**दिनांक : 17 जून 2026**
बुधवार, ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया
**समय : प्रातः 09:30 बजे**
स्थान : महाराणा भूपाल स्टेडियम
( गांधी ग्राउंड ) उदयपुर

**वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति, उदयपुर**
प्रताप गौरव केन्द्र ''टाईगर हिल'', मनोहरपुरा, बड़गांव के पास, उदयपुर ( राज. )
सम्पर्क सूत्र : 9468545516
info@pratapgauravkendra.org /pgkudaipur /pgkudaipur /pgkudaipur

## भाव भरा निमन्त्रण

सम्माननीय

बन्धुवर/भगिनी,

सादर अभिवादन

अत्यन्त आनन्द का विषय है कि 18 जून 2026 को हल्दीघाटी युद्ध में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की विजय के 450 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। हल्दीघाटी का युद्ध मात्र एक युद्ध नहीं महाराणा प्रताप की जिजीविषा तथा भारत के अनूठे स्वातंत्रय समर का ऐसा स्वर्णिम पृष्ठ है, जिसे युगों-युगों तक सम्पूर्ण विश्व में स्मरण किया जाएगा। हल्दीघाटी की भूमि प्रताप की सेना के वीरों के रक्त से पवित्र हुई है। यह भूमि, यह माटी हमें आज भी उन वीर-बलिदानी योद्धाओं की याद दिलाती है जो भारत माता के चरणों में अपने प्राणों की आहुति देकर अमर हो गए।

प्रताप गौरव केन्द्र ''राष्ट्रीय तीर्थ'' विगत 20 वर्षों से महाराणा प्रताप तथा मेवाड़ से जुड़े महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक प्रसंग, सन्दर्भ तथा स्थान के विषयों में शोध तथा जन जागरण के कार्य में जुटा है। हम प्रताप गौरव केन्द्र के माध्यम से मेवाड़ के इतिहास तथा इस पुण्य धरा के मान बिन्दुओं के सम्पूर्ण विश्व में गुंजायमान करने के अपने लक्ष्य में जुटे हुये हैं। हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय ऐसा ही एक महत्वपूर्ण प्रसंग है।

हल्दीघाटी विजय के 450 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में गत वर्ष से जारी कार्यक्रमों की श्रृंखला के समारोप कार्यक्रम में हमारे सौभाग्य से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परम पूजनीय सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत जी का उदयपुर आगमन सुनिश्चित हुआ है। इस निमित्त 17 जून 2026 को भण्डारी दर्शक मण्डप ( गान्धी ग्राउण्ड ) में आयोजित भव्य समारोह में वे विशाल जन समूह को सम्बोधित करेंगे। 17 जून 2026 का वैशिष्ट्य यह भी है कि भारतीय पंचांग के अनुसार वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जन्म जयन्ती ( ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया, विक्रम संवत् 2083 ) भी है।

अत: इस मणि-काञ्चन योग में आयोजित कार्यक्रम में अपने सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधारकर अनुगृहीत करें। आपके आगमन से प्रताप के जीवन एवं कार्यों को विश्व स्तर पर प्रसिद्ध करने के हमारे पुनीत यज्ञ में आपकी आहुति हमारा उत्साहवर्द्धन करेगी।

निवेदक

**दीपक कुमार शुक्ल**
महामंत्री
वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति

**प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा**
अध्यक्ष
वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति

सम्पर्क सूत्र

**महावीर चपलोत**
मो. 94141 61211

**अनुराग सक्सेना**
मो. 99836 22222

भाग ऊंई न भड़ मिले, न ह तपस्या रे ताप।
इण गिण माँ जीवित जळे, जद जनम परताप।।

## खमणोर (हल्दीघाटी) युद्ध का वर्णन

महावीर प्रतापी, रघुकुल-कुल-भूषण, महाराजा-अधिराज, राजराजेश्वर, सूर्यवंश चूड़ामणि, मही-महेन्द्र, यावदार्य-कुल-कमल दिवाकर, छत्तीस राजकुल सिंगार, प्रात: स्मरणीय, वीर शिरोमणि श्री श्री 108 श्री हिन्दुपति महाराणा प्रताप सिंह हिन्दुवा सूरज सम्पूर्ण विश्व इतिहास के सर्वयुगीन महानायक हैं। वे स्वदेशाभिमानी, स्वतन्त्रता के पुजारी, रण-कुशल, स्वार्थत्यागी, नीतिज्ञ, दृढ़-प्रतिज्ञ, स्थितप्रज्ञ, सच्चे वीर, उदार, क्षत्रिय तथा कवि हृदय थे। उनका आदर्श था कि बप्पा रावल का वंशज विदेशी म्लेच्छ आक्रान्ताओं के सामने सिर नहीं झुकायेगा। वे ऐसे समय मेवाड़ के सिंहासन पर बैठे, जब मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़गढ़ तथा बहुत बड़ा भू-भाग मुगलों के आधिपत्य में जा चुका था और सामने था क्रूर, धर्मान्ध और आततायी अकबर जो 1568 ईस्वी में चित्तौड़ विजय के उपरान्त तीस हजार निर्दोष हिन्दुओं आबाल-वृद्ध, स्त्री-पुरूषों के नरसंहार से कलंकित था। तत्कालीन अनेकों राजपूत राजा अकबर की दासता स्वीकार कर उसके सहायक हो गए थे। अकबर ने इन सभी के सहयोग से महाराणा प्रताप के विरूद्ध अपने सम्पूर्ण साम्राज्य का बुद्धिबल, बाहुबल और धनबल लगा दिया।

18 जून, 1576 की सुबह सूर्य कुछ अलग रंग लिये हुए था सुबह की लालिमा रक्त से अधिक गहरी मालूम पड़ती थी। ऐसे में महाराणा प्रताप के नेतृत्व में मेवाड़ के छतीस समाजो से निर्मित सेना तथा आसफ खान और मानसिंह के नेतृत्व में मुगलों की आक्रान्ता सेना खमणोर के निकट बनास नदी के ढ़ावे पर आमने-सामने हुई। वास्तविकता में समकालीन इतिहासकारों ने इसे खमणोर की लड़ाई ही कहा है, किन्तु कालान्तर में इसे हल्दी घाटी युद्ध के नाम से जाना गया। इस क्षेत्र में स्थित दर्रे की मिट्टी का रंग हल्दी के समान पीला होने से इसे 'हल्दीघाटी' कहा गया। प्रात: 8:00 बजे से प्रारम्भ होकर दोपहर लगभग 1:00 बजे तक चले इस युद्ध के बारे में अकबर का दरबारी लेखक अबुल फजल लिखता है, ''इतना रक्त बहा कि खून सस्ता हो गया और पानी महँगा।'' उस दिन युद्ध के दौरान दोपहर में वर्षा हुई जिससे मैदान पानी से भर गया, जब योद्धाओं का रक्त गिरा तो सम्पूर्ण मैदान रक्तवर्णी हो गया और वह कहलाया-'रक्त तलाई'।

जून 18 की प्रात: मेवाड़ की सेना महाराणा प्रताप के नेतृत्व में लोसिंग से हल्दीघाटी पहुंची और दर्रे में मोर्चाबन्दी कर फूलों के बाग के निकट अपना शिविर लगाया। वहीं आसफ खान और मानसिंह के नेतृत्व में मुगल सेना ने मोही से आगे बढ़कर बनास के उत्तरी छोर पर स्थित मोलेला गांव में अपना शिविर लगाया।

**प्रथम चरण** – जैसे-जैसे धूप बढ़ने लगी मुगल सैनिक परेशान होने लगे और व्यग्रता से आगे की ओर बढ़ने लगे परन्तु हल्दीघाटी दर्रे से कुछ पूर्व आकर रूक गए। ऐसे में मेवाड़ के वीरों की हरावल ने कृष्णदास चूण्डावत एवं हकीमखां सूर के नेतृत्व में दक्षिणी पार्श्व से आगे बढ़कर प्रबल हमला किया। इस आक्रमण से मुगलों की हरावल बिखर गई और करीब सात कोस तक भाग गई। बनास नदी के उस पार खड़े आसफ खां एवं सहायक मिहत्तर खां इसे देख रहे थे। उन्होंने ढ़ोल बजाया और अकबर के आने की घोषणा की, लेकिन मुगल सैनिक भाग चुके थे। अब बचे थे हाथी और उनके महावत व चार हजार की मानसिंह के नेतृत्व में कच्छवाहों की सेना।

**द्वितीय चरण** – थोड़ी देर में हाथियों की लड़ाई आरम्भ हुई और मुगल सेना का प्रमुख हाथी गजमुक्ता और मेवाड़ का हाथी राम प्रसाद आमने-सामने हो गये। मुगल सेना के बन्दूकची की गोली से रामप्रसाद का महावत मारा गया और गजमुक्ता का महावत कूद कर रामप्रसाद पर चढ़ गया। इस प्रकार द्वितीय चरण में मुगलों के हाथ प्रताप का हाथी लग गया। जो आसफ खां द्वारा तत्काल अजमेर रवाना कर दिया गया। उसे लेकर मुगल सेना का मौलवी अब्दुल कादिर बदायूंनी अजमेर गया।

**तृतीय चरण** – यहां से मेवाड़ की सेना, मुगल सेना को पीछे धकेलते हुये खमणोर के निकट बनास नदी के ढाणे पर खुले मैदान में ले आई और दोनों सेनाओं के मध्य भीषण संघर्ष आरम्भ हुआ। इस चरण की शुरूआत में ही जगन्नाथ कच्छवाह और गोपाल कच्छवाह से लड़ते हुये रामशाह तंवर उनके पुत्र शालिवाहन और प्रतापसिंह वीरगति को प्राप्त हुये। शालिवाहन का वध देख आक्रोशित महाराणा प्रताप आगे बढ़े। उनके सामने मानसिंह का हाथी आ गया, तभी डोडिया भीमसिंह ने बरछा लेकर मानसिंह के हाथी पर छलांग लगा दी। भीमसिंह डोडिया गोपाल कच्छवाह की तलवार के वार से वीरगति को प्राप्त हुआ। अब महाराणा प्रताप ने चेटक को ऐड़ लगाई और मानसिंह पर हमला किया। इसे देख मुगल सेना एक फिर बिखर गई। अब मानसिंह और प्रताप आमने सामने हो गये। प्रताप ने चेटक को संकेत किया और चेटक ने अपने दोनों पैर मानसिंह के हाथी के मस्तक पर लगा दिए। प्रताप ने मानसिंह को ललकारा, ''ले मानसिंह मैं आया प्रतापसिंह'' और अपने भाले से मानसिंह पर भरपूर वार किया। भाला आता देख मानसिंह का महावत नीचे झुक गया और मानसिंह स्वयं भी अम्बावाड़ी में छिप गया। भाला अम्बावाड़ी को लगा और हाथी को घायल करता हुआ जमीन में धंस गया। हाथी मानसिंह को लेकर युद्ध मैदान से भाग गया। इस बीच महाराणा प्रताप को मुगल सेना ने घेर लिया, अब तक उन्हें सात घाव लग चुके थे। तब उनसे मेवाड़ के सेनापति झाला बीदा ने युद्ध मैदान से बाहर निकलने की विनती की और प्रताप से मुकुट और छत्र लेकर स्वयं धारण लिया। साथ ही भामाशाह व ताराचन्द कावड़िया को महाराणा प्रताप को पीछे से सुरक्षा देने का निर्देश दिया एवं हकीमखां सूर को चेटक की वाग पकड़कर मैदान से बाहर निकालने को कहा। प्रताप के बाहर निकलते ही एक निर्णायक संघर्ष हुआ जिसमें झाला बीदा और हकीमखां सूर के साथ करीब 150 योद्धा वीरगति को प्राप्त हुये और मुगल सेना को बनास पार उसके शिविर तक भगा दिया। यहां पर युद्ध की समाप्ति होती है।

**परिणाम** – युद्ध के दौरान मेवाड़ के 350 और मुगलों के 500 सैनिक खेत रहे। वहीं युद्ध के पश्चात गोगुन्दा में रहते हुये कई सारे मुगल सैनिक मारे गये। जिनका रिकॉर्ड किसी प्रमुख मुगल इतिहासकार ने नहीं लिखा है।

युद्ध के बाद आसफ खान ने मृतक मुगल सैनिकों की गणना करने से मना कर दिया। अत: मुगल सेना के बारे में हल्दीघाटी युद्ध का कोई रिकॉर्ड प्राप्त नहीं होता। युद्ध का अन्त मेवाड़ की युद्धनीति के अनुरूप हुआ। मेवाड़ की सेना के भीषण संघर्ष ने मुगल सेना में डर व्याप्त कर दिया। वे अब पहाड़ों की ओर आने से डर रहे थे। दूसरे दिन तक मुगल सैनिक गोगुन्दा तक पहुँचते रहे। यहीं पर मान सिंह और आसफ खाँ ने अपने शिविर लगाए। सुरक्षा के लिए खाईयाँ खोदी गई और सभी प्रवेश मार्ग पर आड़ लगाई गई। यह डर हल्दीघाटी में मेवाड़ की विजय का परिणाम था।

मुगल सेना अगस्त 1576 के अन्त तक वापसी करने लगी और 1 माह के भीतर वह अजमेर लौट गये। युद्ध के उपरान्त अकबर ने मानसिंह और आसफ खां की ड्योढ़ी बन्द कर दी और अपनी करारी पराजय से तिलमिलाकर स्वयं मेवाड़ पर चढ़ आया और दो महीने भटकने के बाद खाली हाथ लौट गया।

**विजय का शिलालेख सुरखण्ड का खेड़ा** – ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, विक्रम संवत् 1642 रणछोड़ राय मन्दिर प्रशस्ति, सुरखण्ड का खेड़ा, सराड़ा। महाराणा धिराज प्रताप सींघजी ने राठड़ का रा, ज पराजि कर सिसोदीय, ण का राज संवत 1642, में राज प्रताप की, आ सुरखंड नगरे पर, राज काद उस समे, मुगल अकबर, के विषात सेनापती रा, मानसेह को सात जुद, था महाराणा जी अस वज, पइ ऊ खुसी में रनसड़, जी का मदीरा डोरी थ 3, स का प्रसद की आलु, बी हल 4 पुजारी कुव, र को दा जेठ सुकल-11।

टोप कट्यो सर धड़ कट्यो, जीणा जामण साथ।
असी धरा ऐसी धसी, जो नागण जोड़े हाथ।।